Dr. RANJEET KUMAR

Dept. of History

H.D.Jain College, Ara.

B. A., Semester -4, Unit-5, (MJC-4)

फ्रांसीसी क्रांति के नये विमर्श **(French Revolution New Discourses)**

परिचय:-
फ्रांसीसी क्रांति (1789–1799) आधुनिक विश्व इतिहास की सबसे निर्णायक घटनाओं में से एक थी। यह केवल सत्ता परिवर्तन की घटना नहीं थी, बल्कि राजनीति, समाज, अर्थव्यवस्था, धर्म और विचारधारा सभी में गहरे और स्थायी परिवर्तन की प्रक्रिया थी। इस क्रांति ने प्राचीन राजशाही व्यवस्था (Ancien Régime) का अंत किया और स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व जैसे सिद्धांतों को विश्व राजनीति के केंद्र में स्थापित किया।

फ्रांसीसी क्रांति ने यह स्पष्ट कर दिया कि सत्ता का स्रोत अब जन्म, वंश या ईश्वरीय अधिकार नहीं, बल्कि जनता की संप्रभुता है। यही विचार आगे चलकर आधुनिक लोकतंत्रों, संवैधानिक शासन और नागरिक अधिकारों की नींव बना।

प्राचीन शासन व्यवस्था **(Ancien Régime):-**

1. निरंकुश राजशाही

क्रांति से पहले फ्रांस में निरंकुश राजतंत्र था। राजा लुई सोलहवें को ईश्वर का प्रतिनिधि माना जाता था। कानून बनाना, कर लगाना, सेना और न्याय व्यवस्था पर पूर्ण नियंत्रण राजा के पास था। जनता की राजनीतिक भागीदारी लगभग शून्य थी।

2. तीन वर्गों की व्यवस्था (Estates System)

फ्रांसीसी समाज तीन वर्गों में विभाजित था:

a. पहला वर्ग – पादरी (Clergy)
b. दूसरा वर्ग – कुलीन (Nobility)
c. तीसरा वर्ग – सामान्य जनता (Third Estate)

तीसरा वर्ग कुल जनसंख्या का लगभग 97 प्रतिशत था, जिसमें किसान, मजदूर, व्यापारी और शहरी कामगार शामिल थे। इसके बावजूद राजनीतिक अधिकार और सत्ता पहले दो वर्गों के पास केंद्रित थी। करों का पूरा बोझ तीसरे वर्ग पर था, जबकि पादरी और कुलीन वर्ग विशेषाधिकारों का आनंद लेते थे।

फ्रांसीसी क्रांति के कारण**:-**

1. आर्थिक कारण

फ्रांस की अर्थव्यवस्था गंभीर संकट में थी।
• अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम में वित्तीय सहायता
• लगातार युद्धों का खर्च
• शाही दरबार की विलासिता

इन सब कारणों से फ्रांस भारी कर्ज में डूब गया। घाटे की भरपाई के लिए कर बढ़ाए गए, जिसका भार मुख्यतः तीसरे वर्ग पर पड़ा।

2. सामाजिक असमानता

सामाजिक संरचना अत्यंत असमान थी। किसान और मजदूर अत्यधिक कर देते थे, जबकि कुलीन और पादरी वर्ग कर-मुक्त थे। यह असमानता जनता में असंतोष और आक्रोश का मुख्य कारण बनी।

3. राजनीतिक कारण

जनता को निर्णय प्रक्रिया से पूरी तरह बाहर रखा गया था। Estates-General जैसी संस्थाएँ केवल औपचारिक थीं और वास्तविक सत्ता राजा के हाथों में थी।

4. बौद्धिक कारण (Enlightenment)

जॉन लॉक, रूसो और मॉन्टेस्क्यू जैसे प्रबोधनकालीन विचारकों ने
• प्राकृतिक अधिकार
• सामाजिक अनुबंध
• शक्तियों का विभाजन

जैसे विचार प्रस्तुत किए। इन विचारों ने निरंकुश राजशाही के नैतिक आधार को चुनौती दी और जनता में राजनीतिक चेतना पैदा की।

क्रांति की शुरुआत **(1789)**:-

1789 में राजा लुई XVI ने कर संकट के समाधान के लिए Estates-General की बैठक बुलाई, लेकिन मतदान व्यवस्था में असमानता के कारण तीसरा वर्ग असंतुष्ट हो गया।

1. टेनिस कोर्ट शपथ

20 जून 1789 को तीसरे वर्ग ने स्वयं को राष्ट्रीय सभा घोषित किया और संविधान बनाने की शपथ ली। यह क्रांति का निर्णायक मोड़ था।

2. बास्तील का पतन

14 जुलाई 1789 को बास्तील जेल पर हमला हुआ। यह घटना निरंकुश सत्ता के प्रतीक पर सीधा प्रहार थी और फ्रांसीसी क्रांति का प्रतीक बन गई।

मानव और नागरिक अधिकारों की घोषणा**:-**

1789 में जारी मानव और नागरिक अधिकारों की घोषणा आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्था की आधारशिला है। इसके प्रमुख सिद्धांत थे:

• कानून के समक्ष समानता
• अभिव्यक्ति और विचार की स्वतंत्रता
• संपत्ति का अधिकार

इस घोषणा ने नागरिक अधिकारों को सार्वभौमिक सिद्धांत के रूप में स्थापित किया।

राजशाही का अंत और गणराज्य की स्थापना**:-**

1792 में फ्रांस को गणराज्य घोषित किया गया।
1793 में राजा लुई XVI और रानी मैरी एंटोनेट को गिलोटिन पर फांसी दी गई।

यह घटना यह दर्शाती है कि अब सत्ता का केंद्र राजा नहीं, बल्कि जनता है।

आतंक का शासन **(Reign of Terror)**:-

1793–1794 के बीच रोबेस्पिएर के नेतृत्व में आतंक का शासन चला। हजारों लोगों को "राजद्रोही" घोषित कर मार दिया गया। यह चरण यह दिखाता है कि आदर्शों के नाम पर जब सत्ता निरंकुश हो जाती है, तो वह स्वयं दमनकारी बन सकती है।

डायरेक्टरी और नेपोलियन का उदय**:-**

आतंक के शासन के बाद डायरेक्टरी शासन प्रणाली लागू हुई, लेकिन यह कमजोर और भ्रष्ट सिद्ध हुई।
1799 में नेपोलियन बोनापार्ट सत्ता में आया और फ्रांसीसी क्रांति का युग समाप्त हुआ।

फ्रांसीसी क्रांति की विरासत**:-**

• राजशाही और सामंतवाद का अंत
• राष्ट्रवाद और लोकतंत्र का उदय
• संविधानवाद और नागरिक अधिकारों का विकास
• आधुनिक राजनीतिक विचारधाराओं की नींव

New Discourses क्या है**:-**
New Discourses एक आधुनिक वैचारिक मंच है, जिसकी स्थापना James Lindsay ने की। इसका उद्देश्य आधुनिक सामाजिक और राजनीतिक विचारधाराओं, विशेष रूप से Critical Theory, Identity Politics और Woke Ideology की आलोचनात्मक समीक्षा करना है।

James Lindsay का वैचारिक दृष्टिकोण
James Lindsay का मानना है कि आधुनिक प्रगतिशील विचारधाराएं:

• व्यक्ति के बजाय समूह पहचान पर जोर देती हैं
• समाज को उत्पीड़क और पीड़ित के खांचे में बाँटती हैं
• अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को सीमित करती हैं

उनके अनुसार यह प्रवृत्तियाँ लोकतांत्रिक संवाद को कमजोर करती हैं।

Critical Theory की आलोचना

New Discourses के अनुसार:

• सत्य को केवल सामाजिक निर्माण माना जाता है
• वस्तुनिष्ठता को खारिज किया जाता है
• शक्ति को हर सामाजिक संबंध का मूल आधार बताया जाता है

Lindsay इसे आधुनिक समाज के लिए खतरनाक मानते हैं क्योंकि इससे तर्क और स्वतंत्र सोच कमजोर होती है।

Woke Ideology पर दृष्टिकोण**:-**

“Woke” शब्द मूलतः सामाजिक अन्याय के प्रति जागरूकता से जुड़ा था, लेकिन New Discourses के अनुसार अब यह:

• असहमति को अनैतिक घोषित करता है
• विचारों पर नैतिक नियंत्रण लगाता है
• अकादमिक स्वतंत्रता को सीमित करता है

शिक्षा और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता**:-**

Lindsay का तर्क है कि कई विश्वविद्यालयों में विचारधारात्मक प्रशिक्षण हो रहा है, जहाँ आलोचनात्मक सोच की जगह राजनीतिक नैतिकता सिखाई जा रही है। उनके अनुसार, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता लोकतंत्र की आत्मा है और इसे सीमित करना नई प्रकार की तानाशाही को जन्म देता है।

विचारधारा बनाम स्वतंत्रता**:-**

फ्रांसीसी क्रांति ने स्वतंत्रता के आदर्श को जन्म दिया, लेकिन आतंक के शासन में वही आदर्श दमन का साधन बन गया।
New Discourses इसी ऐतिहासिक अनुभव की याद दिलाता है कि जब विचारधारा सर्वोच्च बन जाती है, तो स्वतंत्रता खतरे में पड़ती है।

समानता की अवधारणा**:-**

- फ्रांसीसी क्रांति ने कानूनी और नागरिक समानता पर जोर दिया।
- New Discourses पहचान आधारित समानता की आलोचना करता है।

शक्ति और नैतिकता**:-**

दोनों यह स्पष्ट करते हैं कि जब नैतिकता सत्ता का रूप ले लेती है, तो स्वतंत्रता और विवेक दोनों खतरे में पड़ जाते हैं।
निष्कर्ष**:-**
फ्रांसीसी क्रांति हमें सिखाती है कि स्वतंत्रता बिना विवेक के विनाशकारी हो सकती है,
और New Discourses यह चेतावनी देता है कि विवेक बिना स्वतंत्रता के अर्थहीन है।

दोनों का संयुक्त अध्ययन आधुनिक लोकतंत्र, विचारधाराओं और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को समझने के लिए अत्यंत आवश्यक है।